# अनबूझे अबुझमाड़िया को बूझने की चाह

डॉ. श्रीमती कृष्णादास
डॉ. मिताश्री मित्रा

भारत के मध्य में स्थित ''मध्यप्रदेश'' उन राज्यों में से एक है जहाँ आदिवासियों का बाहुल्य है। यह अन्य राज्यों की तुलना में काफी पिछड़ा हुआ है, म. प्र. के दक्षिण-पूर्व में स्थित बस्तर जिले का स्वरूप काफी पिछड़ा है। वहाँ निवास करने वाले आदिवासी कलम एवं कैमरे के केंद्रबिंदु रहे हैं एवं सदैव जनसामान्य के लिए भी आकर्षण का केंद्र रहे हैं।उनका सरल जीवन, सांस्कृतिक विरासत, परंपराएँ, रीति-रिवाज, इत्यादि सभी बातें हमें विमोहित करती हैं।

१९९१ की जनगणना के अनुसार म. प्र. की कुल जनसंख्या ६६१.३५ लाख है। इसमें २२.९४ प्रतिशत जनसंख्या (१५१.७३ लाख) आदिवासियों की है। बस्तर जिले में आदिवासियों की जनसंख्या का प्रतिशत राज्य के प्रतिशत से विशेष रूप से अधिक है इसलिए म. प्र सरकार ने इसे अनुसूचित क्षेत्र घोषित किया है।

प्राकृतिक रूप से बस्तर को दो भागों में बाँटा जा सकता है - पहला, जिले का निचला भाग, जहाँ पहाड़ियाँ हैं, एवं दूसरा, जिले की दक्षिण की ओर का पहाड़ी और असमतल पठार - जिसमें ऊँची पहाड़ियाँ और घने जंगल हैं, इसमें विशेष रूप से उल्लेखनीय ''अबुझमाड़ क्षेत्र'' है जो नारायणपुर तहसील के पश्चिम और दक्षिण - पश्चिम में स्थित है। भौगोलिक दृष्टि से अबुझमाड़ का भौतिक विभाजन पृथक रूप से किया जा सकता है। यह सघन वनों से आच्छादित पर्वतीय शिखरों, घाटियों, निर्झरिणियों एवं नदियों से घिरा बीहड़, दुर्गम क्षेत्र है। इसका क्षेत्रफल लगभग १५०० वर्ग मील है। इसके पर्वतीय शिखरों की समुद्र तल से ऊँचाई २०५० फीट से लेकर ३३२२ फीट तक है। इसके चौदह पर्वत ३०००वर्ग फीट से अधिक ऊँचे होने के कारण क्षेत्र को और अधिक दुर्गम बना देते हैं। इन सभी शिखरों एवं निर्झरिणियों के अलग-अलग विशिष्ट नाम हैं। अबुझमाड़ के निवासी इन नामों के साथ क्रमशः ''कोट'', ''कोटी'', अथवा ''मेटा'' एवं ''गुनछा'' अथवा 'ब्रोह' शब्द जोड़ते हैं।

अबुझमाड़ क्षेत्र में निवास करने वाले ''अबुझमाड़िया'' की अपनी अलग विशिष्ट पहचान है। इस क्षेत्र की दुर्गमता के कारण बाह्य जगत से इनका संपर्क नगण्य रहा है। अपने एकाकीपन के कारण ये अपनी परंपरागत संस्कृति, धार्मिक मान्यताओं तथा सामाजिक संरचना को सुरक्षित बनाए हुए हैं और आज भी अत्यधिक पिछड़े हुए हैं।

वर्तमान प्रचलित 'अबुझमाड़िया' नामकरण वास्तव में बाहरी लोगों द्वारा किया गया है, जिसका अर्थ है 'अज्ञात' अथवा 'रहस्यमय जंगली पहाड़ी क्षेत्र के निवासी', इस नाम की व्युत्पत्ति के संबंध में कई भ्रांतियाँ हैं। अंग्रेजी लेखक ग्रिग्सन ने इन्हें 'हिल माड़िया' अथवा 'पहाड़ी माड़िया' कहा है। 'माड़िया' शब्द की व्युत्पत्ति गोंडी शब्द 'माड़' से हुई है, जिसका अर्थ 'वृक्ष' अथवा 'जंगल' है। मूल निवासी स्वयं को आज भी 'मेटाभूम' अथवा 'माड़िया' पुकारते हैं। सेंसस ने इन्हें इनके मूल नाम 'मेटाकोईतौर' से संबोधित किया है।

१९९१ की जनगणना के अनुसार अबुझमाड़िया की जनसंख्या १७,०१६ है। अबुझमाड़ क्षेत्र के कुल २२० ग्रामों में ४, ३२७ माड़िया परिवार निवास करते हैं। इनके गाँव छोटे-छोटे, दूर-दूर बसे हुए एवं पगडंडियों से जुड़े हुए हैं। अबुझमाड़िया अरण्य की गोद में पलें, भोले - भाले, हँसमुख, शर्मिले, आकर्षक

लोग हैं । शारीरिक संरचना की दृष्टि से ये मध्यम कद गठिले बदन के औसतन ५.५'' ऊँचे कद के होते हैं । इनकी त्वचा का रंग लाल-गोरा से लेकर काला तक होता है । श्री 'नरोना' के अनुसार इनमें तीन प्रकार के प्रजातीय तत्व विद्यमान हैं -

१. कॉकेशियन, २. द्रविड़ियन ३. बुशमैन प्रजातीय तत्व । इसमें बुशमैन प्रजातीय तत्व केंद्रीय अबुझमाड़ के लगभग बीस प्रतिशत लोगों में विद्यमान है ।

इनके गाँव के स्थल का चयन वास्तव में पेंदा कृषि के उपयुक्त स्थान को देखकर की जाती है । अक्सर पहाड़ी ढाल पर नदी के किनारे लकड़ी तथा बाँस से तथा घास-फूस की छप्पर वाले घर होते हैं । स्थानांतरित कृषि के कारण इनके गाँव अस्थायी होते हैं । एवं पेंदा कृषि के स्थान के चयन के साथ-साथ गाँव के स्थान एवं नामों में परिवर्तन के कारण आबाद ग्रामों की पहचान कठिन होती है । गाँव पारों में बँटे होते हैं, जिसके एक छोर पर घोटुल स्थित होता है । घोटुल में अविवाहित युवा बालक-बालिकाएँ शाम के बाद एकत्रित होकर नृत्य, संगीत लोककथाओं, कहानियों आदि के माध्यम से दीक्षित होकर अपनी सांस्कृतिक धरोहर को आज भी संजोए हुए हैं । अतः अधिकांश 'माड़िया गाँव एकगोत्री हैं। इनमें एकगोत्री विवाह होना वर्जित है । अतः माड़िया घोटुल में यौन-संपर्क निषिद्ध होता है। सामान्यतः घर में मेहमानों के आने-जाने का कमरा ''अलगी'' होता है । इसके अलावा एक ''अघा'' अर्थात् पति के रहने एवं सोने का कमरा होता है जिसमें पत्नी एवं युवतियों का प्रवेश निषेध होता है । घर में एक ''अंगादी'' या रसोई घर होता है, जिसमें पत्नी एवं युवतियाँ शयन भी करती हैं । स्त्रियों को जमीन के अतिरिक्त कहीं और शयन करना निषिद्ध है । इसके अतिरिक्त एक ''लोनू'' अथवा हानाल खोली होती है, जिसे ये भंडार गृह के रूप में उपयोग करते हैं । इसी कमरे के एक किनारे पर पूर्वजों की आत्मा ''हानाल कुंडा'' में निवास करती है । इस कमरे में बाहरी व्यक्ति का प्रवेश निषिद्ध होता है । सभी प्रमुख पर्वों पर ''ह्यनाल कुंडा'' की श्रद्धापूर्वक पूजा-अर्चना की जाती है । इसके बाहर की ओर रजस्वला स्त्रियों के लिए एक अलग कमरा होता है जिसे ''वेंडाकुरमा'' कहते हैं । प्रसूति के पश्चात् भी कुछ दिनों के लिए प्रसूता को इसी कमरे में रखा जाता है । यहाँ पुरुषों का प्रवेश-निषिद्ध होता है । पालतू जानवरों विशेष रूप से सूअर के लिए घर के बाहर अलग से बाड़ा बनाया जाता है । इनकी आजीविका का प्रमुख स्रोत कृषि है । सरकारी प्रतिबंध के बावजूद आज भी ये परंपरागत स्थानांतरित कृषि, जिसे ये 'पेंदा खेती' कहते हैं, के द्वारा अपना जीवन-यापन करते हैं । ये कोदो, कुटकी, बाजरा, सांवा, उड़द, अरहर, मूँग, कुल्थी और सब्जियों की कृषि करते हैं । वनोपज संकलन इनकी आजीविका का एक अन्य प्रमुख स्रोत है । जंगल में हर्रा, महुआ, बहेरा, तिखुर, चिरौंजी, तेंदू, आम, जामुन, आँवला, इमली, फूलबाहरी, शहद, कंदमूल संकलित करके निकट के बाजार में विक्रय करते हैं, एवं कभी-कभी विनिमय द्वारा कुछ सामग्री क्रय भी करते हैं । वनोपज संकलन कार्य में घर के सभी सदस्य सहभागी होते हैं । आज भी इनका जीवन वनों पर ही आधारित है, इसके अतिरिक्त ये श्रमिक के रूप में कार्य करते हैं ।

इनका सामाजिक संगठन अत्यंत मजबूत होता है । इनके जीवन में परंपरागत संस्कारों, त्यौहारों एवं उत्सवों का अत्यंत महत्व है, जो इनके शुष्क, कठोर व संघर्षमय जीवन में सरसता और उत्साह का संचार करते हैं, धार्मिक अनुष्ठान, जादूटोना एवं अंधविश्वास के प्रति इनमें अटूट आस्था है । इनके त्यौहार विशेषतः कृषि से संबंधित हैं । त्यौहार को ये ''कोरता हिन्डान'' कहते हैं । इनके चार त्यौहार प्रमुख हैं अगस्त में 'तुर कोरता टिन्डाना' सितंबर में 'हिक्का कारता चिन्डाना' अक्टूबर में 'वान्ज कारता टिन्डाना' और फरवरी के बाद मानाया जाने वाला 'कोहेला कोरता टिन्डाना'' ।

इसमें बालविवाह का प्रचलन नहीं है । वे वयस्क होने पर युवक-युवतियों की रजामंदी के पश्चात् ही विवाह संपन्न होते हैं । अबुझमाड़िया स्त्रियाँ अलंकरण एवं आभूषण पहनने की बहुत शौकीन होती हैं । अलंकरण हेतु शरीर के विभिन्न भागों में गोदना गुदवाना उन्हें विशेष प्रिय है । स्त्रियाँ रंग-बिरंगी मनको, मोतियों, कौड़ियो की माला एवं चांदी तथा गिलट के जेवरों से स्वयं को सजाती हैं । पुरुष भी रंग बिरंगे पंखो से बने सिरमौर एवं रंग-बिरंगी मोतियों की मालाएँ पहनते हैं । सामान्यतः स्त्रियाँ साड़ी को अपनी कमर के चारों ओर लपेटकर पहनती हैं एवं पुरुष धोती पहनते हैं । वर्तमान बाह्य जगत से संपर्क के कारण उनमें साड़ी - ब्लाउज एवं धोती - कुरता तथा लूंगी पहनने का प्रचलन हो गया है ।

अबुझमाड़ में स्वशासन का उदाहरण आज भी देखने को मिलता है । क्षेत्र परगनों में बँटा है । इसके प्रमुख परगनिया माझी हैं । अपने विवाद एवं झगड़ों का निपटारा इन्हीं के द्वारा होता है । अपने शांत जीवन में ये किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप पसंद नहीं करते।शहरी व्यक्तियों विशेष रूप से सरकारी कर्मचारियों के प्रति सदैव सशंकित होते हैं ।

आधुनिक चकाचौंध की दुनिया से दूर इनकी शिक्षा की स्थिति अत्यंत दयनीय है । साक्षरता का प्रतिशत पाँच से भी कम है, शिक्षा की ज्योति जलाने एवं सर्वांगीण विकास की स्वयं स्फूर्त शक्ति एवं प्रेरणा देने का कार्य नारायणपुर स्थित रामकृष्ण मिशन आश्रम ने १९८६ में आरंभ किया है । जिसके आशातीत एवं उत्साह वर्धक परिणाम निश्चित ही उनके उन्नयन में सहायक होंगे । अबुझमाड़ में प्राकृतिक संसाधन विपुल है, परन्तु उनकी भौतिक आवश्यकताएँ अत्यधिक सीमित है । अपनी व्यवस्था के अनुसार इनके जीवन के मूल्यों को आँकने का प्रयत्न एवं उनके विकास तथा उत्थान के प्रयास हमारी आत्मकेंद्रीयता ही कही जा सकती है, शिक्षा ही उनमें स्वचेतना जागृत कर धीरे-धीरे उनके विकास के मार्ग से अवरोधों को दूर कर देश की मुख्यधारा से जोड़ने में सहायक होगी ।

# अबुझमाड़ के हथियार एवं औजार